I Lecture Series No:- 66.

Online Class,
Date – 2/2/2022,
Day – Wednesday
Time – 10:50 to 11:40 A.M

TOPIC

(1) Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A Part :– II
Paper – (5.)
A.N.D. College Shahpur Patory, Samastipur.

(1) Advaita,

Ans! – शंकर के अनुसार मोक्ष साधक को कोई नई वस्तु नहीं प्रदान करता। मोक्ष को तो 'प्राप्तस्य प्राप्ति' कहा गया है। प्राप्त वस्तु को पुनः प्राप्त करना ही मोक्ष है, आत्मा मूलतः स्वतंत्र एवं मुक्त है, वह बंधन-ग्रस्त नहीं होती, हमें ~~उसके~~ उसके बंधनग्रस्त होने का आभास मिलता है, मोक्ष प्राप्ति के बाद आत्मा के नष्ट होने का प्रश्न नहीं उठता, वास्तव में विश्व मिथ्या है, और अनेक (जीवात्माओं) आत्मायें भी मिथ्या है, माया, बंधन एवं दुःख सभी मिथ्या है, माया, बंधन एवं

P.T.O.

(2)

दु:ख ~~सी~~ सभी 'मिथ्या है', अज्ञानवश व्यक्ति इन्हें वास्तविक समझता है। अज्ञान के हटते ही वह इन सबकी निस्सारता समझ जाता है, और वह बंधन से मुक्त हो जाता है। आत्मा जब अपने स्वरूप को भूल जाती है, तब वह बंधन में जकड़ जाती है। (मुक्ति) मुक्त हो जब उसे अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। आत्मा को भूले हुए स्वरूप का स्मरण हो जाना ही मोक्ष है। आत्मा अपने गले में पड़े हार की खोज में इधर-उधर दौड़ती रहती है, जब सभी होकर

P.T.O.

को पता चल जाता है तब उसे कोई नई वस्तु नहीं मिलती प्राप्त किया जाता बल्कि वो पहले से ही उसके पास में पड़ा था जिसके विषय में उसे विस्मरण हो गया था।

शंकर के अनुसार मुक्ति के दो प्रकार हैं।

(1) जीवनमुक्ति और
(2) विदेहमुक्ति, शरीर त्याग करते हुए मोक्ष पाना ही जीवन मुक्ति है।

यहां मोक्ष प्राप्ति के बाद तुरंत शरीर नष्ट नहीं होता। शरीर का निर्माण, शरीर संचित कर्मों के फल में होता है। जब तक इन कर्मों का फल भोग नहीं किया जाता है, शरीर विद्यमान रहता है। शंकर के इस कथन को एक उदाहरण

etc. " END "